RNI No. DELHIN/2017/74159

ISSN 2581-8856

18

सृजन सरोकार

वर्ष 6 / अंक 4 / जुलाई-सितम्बर 2023

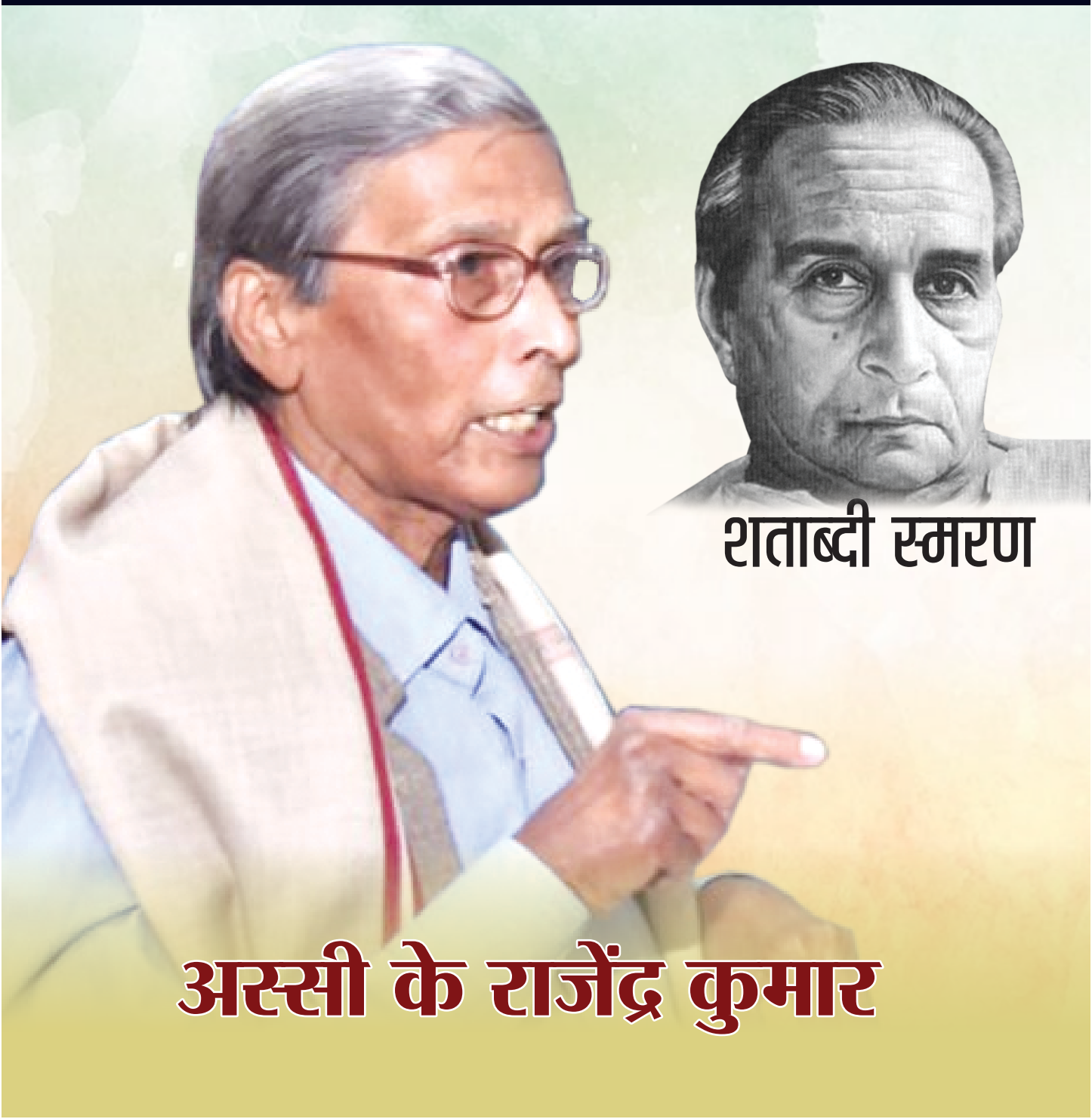

शताब्दी स्मरण

अस्सी के राजेंद्र कुमार

ISSN 2581-8856

सृजन सरोकार

वर्ष 6 | अंक 4 | जुलाई–सितम्बर 2023

प्रधान संपादक
गोपाल रंजन

कार्यकारी संपादक
कुमार वीरेन्द्र

कार्यालय
G.H.–1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स,
लाल मार्केट के सामने, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली–110063

RNI NO. DELHIN/2017/74159

ISSN 2581-8856

सृजन सरोकार

वर्ष 6 | अंक 4 | पूर्णांक 18 | जुलाई–सितम्बर 2023

प्रधान संपादक
गोपाल रंजन

कार्यकारी संपादक
कुमार वीरेन्द्र

सम्पादक मंडल

प्रो० कृष्णचन्द्र लाल
kclal55@gmail.com

प्रो० अजय जैतली
ajayjaitly@gmail.com

डॉ. सुभाष राय
raisubhash953@gmail.com

प्रो० मिथिलेश
onlymithilesh@gmail.com

अरविन्द कुमार सिंह
arvindksinghald@gmail.com

आवरण : नीतीश कुमार

मुद्रक-प्रकाशक
उमा शर्मा रंजन

संपादन सहयोग
अवनीश यादव

कला पक्ष
द पर्पल पेपर, नई दिल्ली

GH-1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स, लाल मार्केट के सामने,
पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063
फोन : +91-11-4007 9949
मो.नं. : +91-95554 12177, +91-94156 46898
ईमेल : srijansarokar@gmail.com,
granjan234@gmail.com

इस अंक का मूल्य : 80 रुपए

व्यक्तियों के लिए : 320 रुपए (वार्षिक)
संस्थाओं के लिए : 600 रुपए (वार्षिक)
सृजन सरोकार रजिस्टर्ड डाक से मँगाने हेतु एक वर्ष का डाक खर्च 160 रुपए अतिरिक्त
सौजन्य सदस्यता : 5000 रुपए

notnul.com और srijansarokar.page पर भी उपलब्ध

शुल्क सृजन सरोकार के नाम से निम्नलिखित खाते में भेजें
Bank Name : The Nainital Bank Ltd., New Delhi
A/C No. : 0492000000012646
IFSC : NTBL0DEL049

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक उमा शर्मा रंजन द्वारा
एस.आई. प्रिंटर्स, 1534, कासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान,
दिल्ली–110006 से मुद्रित एवं
GH-1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स, लाल मार्केट के सामने, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली–110063 से प्रकाशित
सम्पादक :*गोपाल रंजन

संचालन संपादन अवैतनिक

सभी विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन।
प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
***सामग्री चयन के लिए पीआरबी एक्ट–1867 के तहत जिम्मेदार**

अनुक्रम

अपनी बात

आर्थिक प्रभुत्ववाद और साहित्य ____ 4

आत्मकथ्य

वह लड़का - मेरा अनन्य, मेरा 'आत्म'
-राजेन्द्र कुमार ____ 5

अस्सी के राजेन्द्र कुमार

अपने आसपास की चारूता के साथ
रचती कविताएं-ए. अरविंदाक्षन ____ 14

उदासी में उम्मीद के शब्द-प्रो. प्रभाकर सिंह ____ 19

जीवन की जटिलताओं को सरलता से अभिव्यक्त
करती कविताएँ-महेंद्र प्रसाद कुशवाहा ____ 23

एक कवि जो छन्नन जैसों को जानना चाहता है
-अर्पण कुमार ____ 28

इलाहाबाद आज भी आबाद है (प्रोफेसर राजेन्द्र कुमार
के लिए)-सन्तोष कुमार चतुर्वेदी ____ 31

लघुकथा

दरख्त-नीना सिन्हा ____ 32

शताब्दी-स्मरण

परसाई और आज के व्यंग्यकारों की
नज़र का फेर!-सेवाराम त्रिपाठी ____ 33

व्यंग्य की आँच और परसाई के निबंध
-आशुतोष कुमार सिंह ____ 37

एथेंस की सड़कों पर घूमता सुकरात और परसाई
-भारती वत्स ____ 41

पुनः पुनः गांधी

जैनेन्द्र की 'पत्नी' और गांधी (एक कहानी-युग्म
का विवेचन)-रामस्वरूप चतुर्वेदी ____ 45

गांधी के विचार एवं मनोविज्ञान
-धर्मेंद्र कुमार सिंह ____ 47

गांधी विचार का भविष्य-निशिकांत कोलगे से
मनोज मोहन की वार्ता ____ 49

पूर्वोत्तर का प्रदेश

अरुणाचल प्रदेश और अपनी ही महोभूमि से
अनजान मीडिया-राजीव रंजन प्रसाद ____ 53

संस्मरणांजलि

ज्ञात ब्रह्मांड में मानव ही महामानव है इसकी प्रतिष्ठा
होनी चाहिए : खगेन्द्र ठाकुर-खगेन्द्र ठाकुर से
अशोक कुमार प्रसाद की बातचीत ____ 61

आलेख

आठवें दशक का स्त्री लेखन और स्त्री विमर्श
-प्रतिमा प्रसाद ____ 64

कहानी

एक रिश्ता यह भी-शैलेय ____ 68

यंगर्स लव-संदीप तोमर ____ 74

मूँछों पर ताव-अमिता प्रकाश ____ 79

प्यार के इस खेल में-ज्ञान चन्द्र बागड़ी ____ 83

कविताएं

दिनेश कुशवाह-बेटी जनम का सोहर / लिखनी /
पहेली / आदमी / फिर वही काशी फिर वही
कबीर / हँसी / सादा जीवन : उच्च विचार ____ 88

नरेश अग्रवाल-मेरी मृत्यु के बाद / आभास / पहचान /
समाज के बीच खड़ा एक आदमी / दर्द ____ 90

धीरेंद्र कुमार पटेल-पानी / परिदृश्य बदलता है /
आंखें / पगडंडियां / महानगर ____ 92

वंदना पराशर-गुम होते रिश्तों के नाम /
भागते हुए लोग / चंदा / चुप्पियां ____ 93

संदीप तिवारी-अब जब मिलेंगे / एक हरी फुनगी
जितना अच्छा / भरमखिलौना / अपना जहाँ
ठिकाना होगा / वही मेरा स्कूल ____ 95

अमरजीत राम-दमघुटनी / गटर का आदमी / चाँद,
मैं और वे / ट्विन टॉवर / छन्नू लाल ____ 97

दिव्या श्री-वर्तमान माँगता है दो पल का ठहराव /
छाती के जख्म / किताब हमारे प्रेम के
बीच का पुल है ____ 100

बीनू शारदा-गार्गी और जबाला ____ 101

ग़ज़ल

आठ ग़ज़लें-रजनीश कुमार मिश्र ____ 104

समीक्षा

आउशवित्ज़ एक प्रेम कथा : गरिमा श्रीवास्तव
-डॉ. कामिनी ____ 106

मानवीय पहलुओं का बोधगम्य चित्रण करती
कविताएँ-शशिभूषण बडोनी ____ 108

लक्षित-अलक्षित

प्रत्यालोचना 2-कुमार वीरेन्द्र ____ 110

अपनी बात

आर्थिक प्रभुत्ववाद और साहित्य

'आर्थिक प्रभुत्ववाद अपने बहुत बड़े और महीन संजाल से मनुष्य के मन, बुद्धि, संवेग, इच्छा को, यहां तक कि उसकी राष्ट्रीय राजनीति और व्यवस्थाओं को भी नियंत्रित कर रहा है; साहित्य, संस्कृति और भाषा का, मनुष्य के मन में, नए ढंग से अर्थांतर और मूल्यांकन कर रहा है; प्रतिरोध और विद्रोह की आवाज़ों को तत्काल बिकने वाले साहित्य की ऊँची कीमत पर माँग से कुचल रहा है। घटिया साहित्य की निपुणता से वह विचारशील और गहरे साहित्य को विस्थापित कर रहा है। सब कुछ इतनी नफ़ासत और क्रमिक प्रक्रिया से होता है कि पाठक मन को ज़रा धक्का न लगे।' यह विचार 2011 के अंत में प्रभाकर श्रोत्रिय ने गुवाहाटी के एक सम्मेलन में व्यक्त किया था। आज हम गुजरे बारह-तेरह साल की ओर दृष्टि डालते हुए विचार करें तो पाएँगे कि इस आर्थिक प्रभुत्ववाद ने अपना पैर अत्यंत तीव्र गति से फैलाते हुए हमारे पूरे अस्तित्व को पंगु कर दिया है। लगातार हाथ पैर मारने के बावजूद प्रतिरोधी ताक़तें एक इंच ज़मीन भी हासिल नहीं कर पाई हैं, उल्टे शत्रु संसाधनों के संजाल में फँसकर अपने को संकुचित करती जा रही हैं।

आज बड़े प्रकाशन संस्थान छोटे संस्थानों को निगल रहे हैं। लघु पत्रिकाएँ लघुतर होती जा रही हैं, बड़ी पत्रिकाएँ लुप्त हो गई हैं क्योंकि उनसे लाभ की गुंजाइश ख़त्म हो गई है: कुछ सांस्थानिक पत्रिकाएँ अवश्य प्रभु-आकांक्षा की पूर्ति के लिए ज़मीन तैयार करती नज़र आ रही हैं। छोटी पत्रिकाएँ भी आ रही हैं लेकिन जिस रफ़्तार से आ रही हैं, उसी रफ़्तार से जा रही हैं क्योंकि इस दुनिया में घुसना बड़ा जोखिम भरा काम है और कुछ उत्साही जन दुनिया बदलने के नारे के साथ बड़े अरमान से प्रवेश करते हैं, जमापूंजी गवां कर चले जाते हैं। हाँ सोशल मीडिया ज़रूर कुछ सार्थक-निरर्थक भूमिका निभा रहा है क्योंकि इसमें जोखिम कम है।यह विषय बहुत जटिल है और बड़ी बहस की माँग करता है, यद्यपि आर्थिक स्रोत वाले आयोजक सम्मेलनों, गोष्ठियों के माध्यम से विचार विमर्श की औपचारिकता करते दिखते हैं, नामचीन उसमें शामिल होकर अपनी प्यास भी बुझा लेते हैं पर हासिल कुछ हो पाता है या नहीं पता नहीं चलता। फिर भी उम्मीद है कि आगे चल कर सार्थक बातचीत होगी। यहाँ इन संदर्भों का ज़िक्र भी इसी आशय से किया गया है।

आज बड़े प्रकाशन संस्थान छोटे संस्थानों को निगल रहे हैं। लघु पत्रिकाएँ लघुतर होती जा रही हैं, बड़ी पत्रिकाएँ लुप्त हो गई हैं क्योंकि उनसे लाभ की गुंजाइश ख़त्म हो गई है: कुछ सांस्थानिक पत्रिकाएँ अवश्य प्रभु-आकांक्षा की पूर्ति के लिए ज़मीन तैयार करती नज़र आ रही हैं।

वरिष्ठ आलोचक और कवि राजेन्द्र कुमार अस्सी साल के हो गए। राजेन्द्र जी सिद्धांतों और मूल्यों को जीने वाले जुझारू क़िस्म के पहरुआ हैं, जिन्हें लगातार मानसिक-शारीरिक तकलीफ़ों ने भी विचलित नहीं किया है। सच कहा जाए तो ईमानदारी से जीते हुए कोई एक्टिविस्ट अजातशत्रु हो सकता है, यह सपने जैसा लगता है। इस अंक में राजेन्द्र जी पर कुछ सामग्री दी गई है जिससे उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर हल्की रोशनी पड़ेगी। व्यंग्य-सम्राट हरिशंकर परसाई का यह जन्म शताब्दी वर्ष है, कुछ आलेख उनपर भी इस अंक में दिए गए हैं।

अगला अंक कवि-आलोचक विजयदेव नारायण साही पर केंद्रित है। आशा है, पाठकों का सहयोग मिलेगा।

वह लड़का - मेरा अनन्य, मेरा 'आत्म'

राजेन्द्र कुमार

स्मृतियों की साँय-साँय में ऊँघते अतीत के वीरान खंडहर। इन खंडहरों में खुद अपने को भी अपने नाम से आवाज़ दो, तो वह आवाज़ भी लौटा दी जाती है। उदास सन्नाटे की गूँज के साथ। पर हम तो न उनमें लौट सकते हैं, न उनको कुछ लौटा सकते हैं।

भूला हुआ-सा याद आ रहा है वह- एक लड़का, जो तब सातवीं कक्षा में आ चुका था। तुकबंदी की शुरुआत पहले ही हो चुकी थी, अब वह कुछ-कुछ कागज़ पर उतार कर उसे सहेजने का मोह भी पाल बैठा। इस काम के लिए पूरी की पूरी एक चौंसठ-पेजी कापी भी अलग कर ली उसने। इस कापी पर जब वह लिखता, तो उसे लगता-उसकी राइटिंग (हस्तलिपि) उन कापियों की तुलना में कुछ ज़्यादा ही अच्छी बन जाती है, जिन पर वह अपने स्कूल का काम करता है।

उसका पारिवारिक परिवेश आर्यसमाजी था। संस्कारों से धर्म-निष्ठ। लेकिन जबसे उसने होश संभाला, घर में किसी को पूजा-पाठ करते नहीं पाया। आम हिंदू परिवारों में जिस तरह पूजा वग़ैरह की जगहें तय होती हैं और देवी-देवताओं की मूर्तियों के सामने हाथ जोड़कर बैठा जाता है, वैसा कुछ भी नहीं। हाँ, मेले-ठेले में मिट्टी के खिलौनों में ढले राम-लक्ष्मण-सीता, शिव-पार्वती या राधा-कृष्ण वग़ैरह दिख जाते, तो उन खिलौनों का आकर्षण बच्चों के लिए ज़रूर होता। उस लड़के को भी कभी-कभी ऐसे खिलौने ख़रीद दिए जाते थे।

पर्वों-त्योहारों पर-मसलन रक्षाबंधन, होली-दीवाली के मौकों पर पारंपरिक रीति-रिवाज़ों और विधि-विधानों का अनुपालन होता था। उस लड़के को ऐसे दिनों की उत्सुक प्रतीक्षा रहती। इस प्रतीक्षा की खास वजह यह थी कि ऐसे मौक़ों पर खाने को तरह-तरह की चीज़ें मिलतीं और खाते भी सब साथ बैठकर। वरना तो उसे अपने पिता के हाथों का बना एकरस भोजन रोज़ अकेले ही बैठकर खाने को मिलता था।

उसके पिता-जिन्हें वह 'बाबूजी' कहता था, उसकी खुशियों का ख़याल न रखते हों, ऐसा नहीं था। सच पूछो तो, एक उम्र तक मां की कमी भी बाबूजी ने ही पूरी की। पर उनकी आर्थिक सीमाएं थीं। अपनी माँ को उस लड़के ने बस तस्वीर में ही देखा-कैमरे से उतारी गई एक ब्लैक एंड व्हाइट फ़ोटो-जिसमें माँ का शव ज़मीन पर रखा है। सिरहाने बाबूजी हैं। बग़ल में, अपनी मौसी की गोद में वह बच्चा है-जो वह खुद है। बस इतना भर! इतने भर से, वह अपनी कल्पना में उस अभाव का चित्र उकेरता है, जिसका नाम उसके लिए 'अम्मा' है।

वह सोचता है, कितना बड़ा रहा होगा वह, जब बाबूजी उसकी दूसरी माँ ले आए होंगे! उसे कसैली-सी याद है-खुद अपने बारे में किसी-किसी को वह यह कहने में मज़ा लेते पाता, 'इस बेटे को देखो, यह अपने बाप की शादी में गया था।'

शहर में कहीं कोई मेला-वेला लगता तो बाबूजी उसे घुमाने ले जाते। भादों में कृष्ण-जन्माष्टमी के दिनों सजाई जाने वाली झाँकियाँ दिखाने में पिता को कितना सुख मिलता होगा, इसका अनुमान करके वह रोमांचित हो उठता। कानपुर में 'कमला टॉवर' और 'काँच का मंदिर' के आस-पास के इलाक़े में कई मंदिर थे। भादो मास में बड़ी भव्य सजावट होती थी उनमें। बिजली की रंग-बिरंगी झालरें। मंदिरों के बाहरी बारजों और छज्जों पर दीवारों के सहारे कतार की कतार सजाई गई मूरतें बिजली-चालित भंगिमाओं में सजीव हो उठतीं। वह लड़का अपने बाबूजी का हाथ पकड़े, भीड़ में, यह सब बड़े विस्मय-विभोर